



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता से बड़वानी जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन में वृद्धि

Avinash Vankhede

Research Scholar, Department of Sociology , Malwanchal University, Indore

Dr. Sonali Pandit

Supervisor, Department of Sociology , Malwanchal University, Indore

सारांश

यह अध्ययन बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का क्षेत्रीय अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि शिक्षा के प्रसार, सरकारी योजनाओं, तथा सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने जनजातीय समाज की सामाजिक संरचना, जीवनशैली और आर्थिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है, जिनका विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक गतिशीलता ने सामाजिक जागरूकता, रोजगार के अवसरों और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की है, जबकि सांस्कृतिक स्तर पर परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन तथा आधुनिकता की ओर झुकाव बढ़ा है। हालांकि, संसाधनों की कमी, शिक्षा तक सीमित पहुँच और सांस्कृतिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अतः संतुलित विकास हेतु शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच सामंजस्य आवश्यक है।

मुख्य शब्द: अनुसूचित जनजाति, शैक्षणिक गतिशीलता, सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन, बड़वानी

अध्ययन का दायरा

प्रस्तुत अध्ययन का दायरा मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों तक सीमित है, जहाँ भील, भिलाला एवं अन्य प्रमुख जनजातीय समुदायों को शामिल किया गया है। यह शोध मुख्यतः शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का संकलन चयनित ग्रामों एवं समुदायों से सर्वेक्षण और साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहलुओं तक सीमित है तथा राजनीतिक या व्यापक राष्ट्रीय स्तर के विश्लेषण को इसमें शामिल नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह शोध एक सीमित समयावधि और नमूने पर आधारित है, अतः इसके निष्कर्ष पूरे जनजातीय समाज पर सामान्यीकृत नहीं किए जा सकते, बल्कि यह क्षेत्र-विशेष के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियाँ सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक विशिष्ट स्थिति रखती हैं, जहाँ परंपरागत जीवनशैली और आधुनिक परिवर्तन प्रक्रियाएँ समानांतर रूप से कार्य कर रही हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, सरकारी नीतियों, वैश्वीकरण और संचार माध्यमों के प्रभाव से जनजातीय समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है, किंतु इन परिवर्तनों की प्रकृति, दिशा और प्रभाव का सम्यक् विश्लेषण अभी भी सीमित है। इस संदर्भ में इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के माध्यम से हो रहे सामाजिक परिवर्तन को समग्र और समालोचनात्मक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा ने जनजातीय समुदायों के जीवन स्तर, रोजगार अवसरों और सामाजिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण पारंपरिक मूल्यों, मान्यताओं और पहचान पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, यह शोध नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के लिए उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से जनजातीय विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सकता है और भविष्य की योजनाओं के लिए उपयुक्त सुझाव प्रदान किए जा सकते हैं। अतः यह अध्ययन जनजातीय समाज में संतुलित विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

भारतीय जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन की स्थिति

मानव समाज में आदिकाल से परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार भारतीय जनजातियों में द्रुत गति से बदलाव की स्थिति दृष्टिगोचर है। जनजाति समुदायों के स्थानों की भौगोलिक स्थितियों, उनकी आबादी, सांस्कृतिक विभिन्नताओं, आर्थिक स्तरों और सन्दर्भिक स्थितियों में काफी अन्तर नजर आता है। आर्थिक एवं राजनैतिक शक्तियों के फलस्वरूप उनका संसार दुनिया के सामने एकाएक अनावरित हुआ है जिससे उन समुदायों में अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उनके आये या हो रहे परिवर्तनों का उल्लेख करना कोई सरल काम नहीं है, मोटे तौर पर उन सबके प्रति जनजातियों की प्रतिक्रिया मिली जुली रही है। यदि हम उन पर विकास सम्बन्धी प्रक्रिया के परिणामों की जांच करें तो हमें ऐसी स्थितियां मिलती हैं जो सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। मध्य एवं पूर्व भारत जनजातियों की दृष्टि से समृद्ध है। इस क्षेत्र में भील, चेचू, गोड़, संधाल, सवारी, खोड़, गड़वा, बगाड़ा तथा जटायू आदि जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक जीवन में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। ईसाई मिशनरियों एवं हिन्दुओं ने यहां की जनजातियों को भी पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है। हिन्दूवाद से प्रभावित यहां अनेक धार्मिक सुधारवादी आंदोलन हुए हैं। व्यापारियों, साहूकारों एवं भूस्वामियों ने यहां की जनजातियों का शोषण किया है। आर्थिक क्षेत्र में यहां की जनजातियों के अन्य लोगों से सहयोगी सम्बन्ध है।

भारतीय जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन की स्थिति के लिए पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, बाह्य सम्पर्क एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव के फलस्वरूप जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक संरचना और सांस्कृतिक स्वरूप में अनेक प्रकार की परिवर्तन पायी गई है। बिहार राज्य के मुसार एवं भुइया, पालामऊ



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

की पहाड़ी एवं उत्तरप्रदेश की थारू, बघेलखण्ड पठार अन्तर्गत सीधी, सिंगरौली, शहडोल, उमरिया एवं अनूपपुर जिले की गोड़ जनजाति, पनिका, बैगा, अगरिया, आदि में द्रुत गति से सामाजिक परिवर्तन की स्थिति पायी गई है। इस क्षेत्र की जनजातियां शिक्षित, जागरूक, धार्मिक एवं विभिन्न प्रकार के आधुनिक कृषि पद्धति को अपनाते हुए पायी गयी हैं। जनजातियां हिन्दुओं के सभी त्यौहारों, उत्सवों जैसे-होली, दशहरा, रामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, आदि बहुत ही धूमधाम से मनाती हैं। विवाह के समय ये लोग हिन्दू परम्परा रीति रिवाज के अनुरूप मंगलशील, हवन, पूजा-पाठ एवं सम्पूर्ण संस्कार हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार ही सम्पन्न करवाते हैं। भारत देश में कुछ प्रांतों की जनजातियों में ईसाई धर्म का प्रभाव भी पाया गया है जिनमें प्रमुख रूप से नागा, भील, गारो, खासो एवं छोटा नागपुर पठार तथा उत्तरी पूर्वी सीमा प्रांतों की जनजातियां हैं।

सांस्कृतिक गतिशीलता एवं सामाजिक परिवर्तन

एम. एन. श्रीनिवास ने भारत द्वारा अनुभव किये गये सामाजिक परिवर्तनों की कई प्रक्रियाओं की व्याख्या की है। उनमें से सांस्कृतिकरण ऐतिहासिक काल से हो रही पुरानी प्रक्रियाओं में से एक है। यह प्रक्रिया अलग-अलग समुदायों और अलग-अलग समयावधि के बीच रही है। उनके अनुसार सांस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक 'निम्न' हिन्दू जाति, या आदिवासी या अन्य समूह अपने रीति-रिवाजों, कर्मकांडों, विचारधारा और जीवन के तरीके को उच्च और अक्सर, दो 'दो बार जन्म लेने वाली' जाति की दिशा में बदलते हैं। आम तौर पर इस तरह के परिवर्तनांक के बाद स्थानीय समुदाय द्वारा परंपरिक रूप से दावेदार जाति को स्वीकार किये जाने की तुलना में जाति पदानुक्रम में उच्च स्थान का दावा किया जाता है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत में विभिन्न प्रकार के जटिल और साथ ही सरल लेकिन समृद्ध लोककथाएं शामिल हैं, जो भारत के जंगलों से घिरे पर्वतीय, घाटियों और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासियों के बीच पायी जाती है, कुछ जनजातियों को छोड़कर, जो विशेष रूप से मैदानी क्षेत्रों तक ही सीमित है। सांस्कृतिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन दोनों ही मानव समाज के सामंजस्य और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सांस्कृतिक गतिशीलता, व्यक्ति और समाज के बीच सांघर्षरहित संबंध स्थापित करने का संदर्भ है। एक समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण समाज की रूपरेखा को बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इससे सामाजिक समृद्धि, साहित्य, कला, और विज्ञान में विकास होता है, जिससे समाज का सामरिक और आर्थिक स्तर बढ़ता है। सामाजिक परिवर्तन समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिवर्तन का मतलब है। इसका उद्दीपन सामाजिक न्याय, जाति-व्यवस्था के खिलाफ, महिला सशक्तिकरण, और विभिन्न समृद्धि क्षेत्रों में नैतिकता के साथ होना चाहिए। सामाजिक परिवर्तन से ही समृद्धि, समाज में सामंजस्य, और समरसता की बढ़ती हुई ऊर्जा आती है।

जनजातीय संस्कृति का एक विशेष महत्व एवं पहचान है, जो अन्य संस्कृतियों से बिल्कुल भिन्न है। जनजातियों में इनके विश्वास, व्यवहार, रीति-रिवाज, परम्पराएं, विधि, परम्परागत ज्ञान, कला, संगीत, नृत्य आदि कलाओं का समृद्ध भंडार होता है। गैर-आदिवासी समुदायों से इनकी संस्कृति पूर्णतः भिन्न होती



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

है। आधुनिकता के प्रभाव ने इन जनजातियों को भी अछूता नहीं छोड़ा है। वर्तमान समय में आदिवासी बच्चे अपनी परम्परागत विधाओं को सीखने में कोई विशेष रुचि नहीं दिखा रहे हैं। जो बालक-बालिकाएं समीपस्थ नगरीय एवं कम्बोई स्कूलों में अध्ययन कर रहे हैं, वे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक विश्वास, व्यवहार और परम्पराओं को अधिक प्राथमिकता देते हुए उन्हें अपनाने का प्रयास कर रहे हैं।

सांस्कृतिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन एक दूसरे के साथ अटूट रूप से जुड़े होते हैं। सांस्कृतिक गतिशीलता से समृद्धि होती है और समृद्धि से समाज में सामाजिक परिवर्तन की संभावना बढ़ती है। समृद्धि और सामाजिक परिवर्तन मिलकर समाज को सशक्त, समृद्ध, और सामंजस्यपूर्ण बनाते हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन एक समृद्ध और समरस समाज की दिशा में प्रमुख अंश हैं, जो मानव समाज को समृद्धि और समृद्धि को सामाजिक परिवर्तन की ऊर्जा में परिणामी बनाते हैं। सांस्कृतिक गतिशीलता और सामाजिक परिवर्तन दोनों ही सशक्तिकरण और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। सांस्कृतिक गतिशीलता से समृद्धि और समृद्धि से सामाजिक परिवर्तन संभव होता है, जो समृद्धि की साझा और समरस बनाए रखने में सहायक हो सकता है।

साहित्य समीक्षा

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख प्रेरक तत्व है, परंतु इसका प्रभाव स्थानीय सांस्कृतिक संरचनाओं के साथ अंतःक्रिया पर निर्भर करता है। वर्मा (2022) ने गरासिया जनजाति में शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का मुख्य साधन माना है, जहाँ शिक्षा के प्रसार से आर्थिक अवसरों, रोजगार के विकल्पों तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि देखी गई। इसी प्रकार चौधरी (2022) का अध्ययन बैगा समाज में यह दर्शाता है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनरुत्थान का भी एक महत्वपूर्ण साधन बनती है। यादव (2022) के अनुसार भील समाज में शिक्षा और परंपरा के बीच एक जटिल अंतःसंबंध पाया जाता है, जहाँ आधुनिक शिक्षा पारंपरिक जीवनशैली को चुनौती भी देती है और उसे पुनर्परिभाषित भी करती है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल सामाजिक उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्संरचना का भी माध्यम है, जो जनजातीय समाज में परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करता है।

दूसरे स्तर पर, 2021 और 2020 के अध्ययनों में यह पाया गया है कि शिक्षा का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामुदायिक संरचना को भी प्रभावित करता है। तिवारी (2021) ने डूंगर जनजाति में आधुनिक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करते हुए बताया कि शिक्षा के प्रसार से पारंपरिक व्यवसायों में परिवर्तन और नई आर्थिक गतिविधियों का विकास हुआ है। गोस्वामी (2021) ने हल्बा समाज में शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का आधार बताते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक स्तरीकरण में परिवर्तन आया है और निम्न वर्ग के लोगों को ऊपर उठने के अवसर प्राप्त हुए हैं। शुक्ल (2020) के मुंडा जनजाति पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है, परंतु इसके लाभ समान रूप से सभी वर्गों तक नहीं पहुँच



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

पाते। पांडेय (2020) के अनुसार सौरिया जनजाति में शिक्षा और संस्कृति के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित करती है। इन अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन को गति देती है, लेकिन इसके प्रभावों में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

तीसरे स्तर पर, 2019 और 2018 के अध्ययनों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को अधिक व्यापक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। राठौर (2019) ने लोधा समाज में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करते हुए बताया कि शिक्षा से सामाजिक चेतना और जागरूकता में वृद्धि होती है, जिससे सामाजिक कुरीतियों में कमी आती है। पटेल (2019) ने गरासिया समाज में सांस्कृतिक अस्मिता और शिक्षा के संबंध को स्पष्ट करते हुए यह दर्शाया कि शिक्षा के प्रसार के बावजूद सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना जनजातीय समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। देशमुख (2018) के अनुसार ठक्कर जनजाति में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समन्वय सामाजिक परिवर्तन का आधार बनता है, जहाँ शिक्षा और संस्कृति के बीच संतुलन स्थापित करने से स्थायी विकास संभव होता है। चौहान (2018) ने कोंध जनजाति के संदर्भ में यह बताया कि शिक्षा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि शिक्षा स्थानीय संस्कृति के अनुरूप नहीं होती, तो उसका प्रभाव सीमित हो जाता है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और संस्कृति के बीच समन्वय सामाजिक परिवर्तन की स्थिरता के लिए आवश्यक है।

अंततः, तिवारी (2017) के कोरकू समाज पर अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन है, परंतु इसका प्रभाव तभी स्थायी होता है जब यह स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप हो। समग्र रूप से इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावित करती है, परंतु यह प्रभाव एकसमान नहीं होता। विभिन्न जनजातियों में शिक्षा के प्रभाव, सांस्कृतिक अनुकूलन और सामाजिक संरचना के आधार पर भिन्न-भिन्न परिणाम देखने को मिलते हैं। बड़वानी जिले के संदर्भ में यह साहित्य यह संकेत देता है कि यहाँ भी शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है, लेकिन इसके प्रभाव को समझने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक विशेषताओं, पारंपरिक संरचनाओं और आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस प्रकार, प्रस्तुत साहित्यिक समीक्षा यह स्थापित करती है कि शिक्षा और सांस्कृतिक गतिशीलता का समन्वय ही जनजातीय समाज में संतुलित और स्थायी सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

1. बड़वानी जिले का भौगोलिक परिचय

मध्य प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित बड़वानी जिला नर्मदा घाटी और सतपुड़ा पर्वतमाला के बीच फैला हुआ एक प्रमुख जनजातीय क्षेत्र है। इसका भौगोलिक स्वरूप मुख्यतः पहाड़ी, वनाच्छादित एवं आंशिक रूप से मैदानी है, जिससे यहाँ की आजीविका, बसावट और संसाधन-उपयोग के स्वरूप



Kavva Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

प्रभावित होते हैं। नर्मदा नदी और उसकी सहायक नदियाँ क्षेत्र की कृषि एवं जल संसाधनों की आधारशिला हैं, जबकि दुर्गम भू-भाग के कारण कई ग्राम अब भी आंशिक रूप से अलग-थलग स्थित हैं।

2. जनसंख्या एवं जनजातीय संरचना

जिले की जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का अनुपात अत्यधिक है, जिनमें भील, भिलाला, पावरा आदि प्रमुख समुदाय शामिल हैं। इन समुदायों की सामाजिक संरचना कुटुंब-आधारित और सामुदायिक सहयोग पर आधारित रही है। जनसंख्या का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, जहाँ परंपरागत सामाजिक संस्थाएँ और स्थानीय नेतृत्व अभी भी प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

3. सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र अपेक्षाकृत पिछड़ा माना जाता है। आजीविका के प्रमुख स्रोत वर्षा-आधारित कृषि, वनोपज संग्रह, दिहाड़ी मजदूरी और सीमित स्तर पर पशुपालन हैं। आर्थिक अस्थिरता, सीमित आय के अवसर और आधारभूत सुविधाओं की कमी (सड़क, स्वास्थ्य, बाजार पहुँच) विकास को प्रभावित करती हैं। फिर भी, हाल के वर्षों में सरकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों और बाजार संपर्क के विस्तार से आय-स्रोतों में आंशिक विविधीकरण देखा गया है।

4. शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्तर पर प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि हुई है, किन्तु माध्यमिक एवं उच्चतर स्तरों पर निरंतरता चुनौती बनी हुई है। आश्रम शालाएँ, छात्रवृत्तियाँ और मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं ने नामांकन और उपस्थिति बढ़ाने में सहायता की है, परंतु अधोसंरचना की कमी, शिक्षकों की उपलब्धता, भाषा संबंधी बाधाएँ तथा आर्थिक कारण ड्रॉपआउट दर को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद, युवा वर्ग में शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता शैक्षणिक गतिशीलता के सकारात्मक संकेत प्रस्तुत करती है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (descriptive-cum-analytical) प्रकृति का क्षेत्रीय अनुभवजन्य शोध है, जिसका उद्देश्य बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का परीक्षण करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा का संकलन संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि के माध्यम से किया गया, जिसमें कुल 300 उत्तरदाताओं (150 पुरुष एवं 150 महिला) को चयनित किया गया। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक सैम्पलिंग (random sampling) तकनीक अपनाई गई, ताकि निष्कर्षों की विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके। द्वितीयक डेटा के लिए शोध पत्रों, पुस्तकों एवं सरकारी रिपोर्टों का उपयोग किया गया। संकलित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों जैसे माध्य (mean), माध्य विचलन, मानक त्रुटि, टी-परीक्षण (t-test) एवं पीयरसन सह-संबंध (Pearson correlation) के माध्यम से किया गया। अध्ययन की वैधता एवं विश्वसनीयता



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

सुनिश्चित करने हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षणों का प्रयोग किया गया, जिससे निष्कर्षों की वैज्ञानिकता एवं प्रमाणिकता स्थापित हो सके।

परिणाम एवं चर्चा

सारणी 1: अनुसूचित जनजातियों में सामाजिक स्थिति का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य (Mean)	माध्य विचलन	माध्य मानक त्रुटि	माध्य मानक विचलन	टी-मूल्य
1	अनुसूचित जनजाति (पुरुष)	150	16.2743	1.8830	0.1538	0.211	14.0081
2	अनुसूचित जनजाति (महिला)	150	13.3140	1.7757	0.1450	—	—

सारणी क्रमांक 1 में अनुसूचित जनजातियों के पुरुषों एवं महिलाओं की सामाजिक स्थिति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दोनों समूहों का नमूना आकार समान (150-150) रखा गया है, जिससे तुलना अधिक विश्वसनीय बनती है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पुरुषों का माध्य मान 16.2743 तथा महिलाओं का 13.3140 है, जो पुरुषों की अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। प्रसरण के संदर्भ में पुरुषों में माध्य विचलन 1.8830 एवं मानक त्रुटि 0.1538 है, जबकि महिलाओं में यह क्रमशः 1.7757 और 0.1450 है, जिससे सीमित फैलाव का संकेत मिलता है। टी-मूल्य 14.0081 तथा स्वतंत्रता की कोटि 298 के साथ पी-मूल्य 0.0001 से कम पाया गया, जो 0.05 स्तर पर अत्यधिक सार्थक अंतर को दर्शाता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जनजातीय समाज में लिंग आधारित सामाजिक असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

सारणी 2: अनुसूचित जनजातियों में आर्थिक स्थिति का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र	विवरण	संख्या	माध्य	माध्य विचलन	माध्य मानक त्रुटि	माध्य मानक विचलन	टी-मूल्य
1	अनुसूचित जनजाति (पुरुष)	150	16.1210	2.0335	0.1660	0.219	13.3239
2	अनुसूचित जनजाति (महिला)	150	13.2007	1.7524	0.1431		

सारणी 2 में अनुसूचित जनजातियों के पुरुषों एवं महिलाओं की आर्थिक स्थिति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दोनों समूहों का नमूना आकार समान (150-150) रखा गया है। प्राप्त आंकड़ों



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

के अनुसार पुरुषों का आर्थिक स्थिति का माध्य मान 16.1210 तथा महिलाओं का 13.2007 पाया गया, जो पुरुषों की अपेक्षाकृत उच्च आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। प्रसरण के संदर्भ में पुरुषों में माध्य विचलन 2.0335 एवं मानक त्रुटि 0.1660 है, जबकि महिलाओं में यह क्रमशः 1.7524 और 0.1431 है, जिससे संकेत मिलता है कि पुरुषों में आर्थिक स्थिति के मानों का फैलाव अधिक है। पुरुषों का मानक विचलन 0.219 दर्शाया गया है, जबकि महिलाओं का उपलब्ध नहीं है। टी-परीक्षण में प्राप्त टी-मूल्य 13.3239 तथा स्वतंत्रता की कोटि 298 के साथ पी-मूल्य 0.0001 से कम है, जो 0.05 स्तर पर अत्यंत सार्थक अंतर को सिद्ध करता है। अतः निष्कर्षतः जनजातीय समाज में आर्थिक स्थिति के स्तर पर लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

सारणी 3: अनुसूचित जनजातियों में शैक्षिक स्थिति का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र	विवरण	संख्या	माध्य	माध्य विचलन	माध्य मानक त्रुटि	माध्य मानक विचलन	टी-मूल्य
1	अनुसूचित जनजाति (पुरुष)	150	16.0543	1.9868	0.1622	0.211	14.4137
2	अनुसूचित जनजाति (महिला)	150	13.0073	1.6600	0.1355		

सारणी 3 में अनुसूचित जनजातियों के पुरुषों एवं महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दोनों समूहों का नमूना आकार समान (150-150) रखा गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पुरुषों का शैक्षिक स्थिति का माध्य मान 16.0543 तथा महिलाओं का 13.0073 पाया गया, जो पुरुषों की अपेक्षाकृत उच्च शैक्षिक स्थिति को दर्शाता है। प्रसरण के संदर्भ में पुरुषों में माध्य विचलन 1.9868 एवं मानक त्रुटि 0.1622 है, जबकि महिलाओं में यह क्रमशः 1.6600 और 0.1355 है, जिससे संकेत मिलता है कि पुरुषों में शैक्षिक स्थिति के मानों का फैलाव अधिक है। पुरुषों का मानक विचलन 0.211 दर्शाया गया है, जबकि महिलाओं का उपलब्ध नहीं है। टी-परीक्षण में प्राप्त टी-मूल्य 14.4137 तथा स्वतंत्रता की कोटि 298 के साथ पी-मूल्य 0.0001 से कम है, जो 0.05 स्तर पर अत्यंत सार्थक अंतर को सिद्ध करता है। अतः निष्कर्षतः जनजातीय समाज में शैक्षिक स्तर पर लिंग आधारित असमानता स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

सारणी 4: अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध का सांख्यिकी विश्लेषण

कारक	संख्या (N)	स्वतंत्रता कोटि (df)	सह-संबंध गुणांक (r)	पी-मूल्य (p-value)	निष्कर्ष (0.05 स्तर पर)
शिक्षा	300	298	0.612	0.0001 से कम	सार्थक सह-संबंध
सामाजिक परिवर्तन	300	298			



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

पीयरसन सह-संबंध गुणांक ($r = 0.612$)

p-value (< 0.05) = 0.0001 से कम

सारणी 4 में अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध का विश्लेषण पीयरसन सह-संबंध विधि के माध्यम से किया गया है, जिसमें 'शिक्षा' और 'सामाजिक परिवर्तन' को प्रमुख चर के रूप में शामिल किया गया है। इस अध्ययन में कुल 300 उत्तरदाताओं का नमूना लिया गया तथा स्वतंत्रता की कोटि 298 निर्धारित की गई। प्राप्त सह-संबंध गुणांक ($r = 0.612$) एक मध्यम से उच्च स्तर के धनात्मक संबंध को दर्शाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ सामाजिक परिवर्तन भी बढ़ता है। इस संबंध की सांख्यिकीय पुष्टि हेतु प्राप्त पी-मूल्य 0.0001 से कम है, जो 0.05 स्तर पर अत्यंत सार्थक माना जाता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच पाया गया संबंध संयोगवश नहीं बल्कि वास्तविक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह परिणाम इस तथ्य को सुदृढ़ करता है कि जनजातीय समाज में शैक्षणिक उन्नति सामाजिक परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है।

सारणी 5: ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र	विवरण	संख्या	माध्य	माध्य विचलन	माध्य मानक त्रुटि	माध्य मानक विचलन	टी-मूल्य
1	अनुसूचित जनजाति (पुरुष)	150	16.2677	1.6906	0.1380	0.196	0.3734
2	अनुसूचित जनजाति (महिला)	150	16.3410	1.7110	0.1397		

सारणी क्रमांक 4.5 में ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों का अनुसूचित जनजाति के पुरुषों एवं महिलाओं के बीच सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दोनों समूहों का नमूना आकार समान (150-150) है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पुरुषों का माध्य मान 16.2677 तथा महिलाओं का 16.3410 है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के औसत मान लगभग समान हैं और अंतर नगण्य है। प्रसरण के संदर्भ में पुरुषों में माध्य विचलन 1.6906 एवं मानक त्रुटि 0.1380 है, जबकि महिलाओं में यह क्रमशः 1.7110 और 0.1397 है, जो दोनों समूहों में समान प्रकार की परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। टी-परीक्षण में प्राप्त टी-मूल्य 0.3734 तथा पी-मूल्य 0.7091 है, जो 0.05 स्तर से अधिक होने के कारण सांख्यिकीय रूप से असार्थक है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान नहीं है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

निष्कर्ष

प्रस्तुत क्षेत्रीय अनुभवजन्य अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता सामाजिक परिवर्तन की एक प्रमुख प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य कर रही है। अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पाया गया कि शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ सामाजिक स्थिति, आर्थिक अवसरों तथा सामाजिक जागरूकता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। पुरुषों और महिलाओं के मध्य सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया, जो यह दर्शाता है कि जनजातीय समाज में अभी भी लिंग आधारित असमानताएँ विद्यमान हैं। विशेष रूप से शिक्षा एवं आर्थिक संसाधनों तक महिलाओं की सीमित पहुँच उनके सामाजिक विकास को प्रभावित करती है। साथ ही, सांस्कृतिक गतिशीलता के प्रभाव से पारंपरिक जीवनशैली, रीति-रिवाजों और सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन हो रहा है, जिससे एक ओर आधुनिकता और विकास के अवसर उत्पन्न हुए हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की चुनौती भी सामने आई है। पीयरसन सह-संबंध विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है, जो यह सिद्ध करता है कि शैक्षणिक उन्नति सामाजिक परिवर्तन की दिशा को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि कुछ क्षेत्रों में परिवर्तन का प्रभाव समान रूप से अनुभव किया जा रहा है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जनजातियों के समग्र विकास के लिए शिक्षा को सशक्त बनाना, आर्थिक अवसरों का विस्तार करना तथा सांस्कृतिक संरक्षण के उपायों को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसके साथ ही, लिंग समानता को सुनिश्चित करने और संसाधनों तक समान पहुँच प्रदान करने की दिशा में प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप अत्यंत आवश्यक हैं, ताकि सामाजिक परिवर्तन संतुलित, समावेशी एवं टिकाऊ रूप से स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, महेश चंद्र (2022). गरासिया जनजाति में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन. जयपुर: राजस्थान जनजातीय अनुसंधान संस्थान। पृ. 15-62।
2. चौधरी, सुरेश कुमार (2022). बैगा समाज में शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान. भोपाल: मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति विकास परिषद। पृ. 21-70।
3. यादव, प्रवीण कुमार (2022). भील समाज में शिक्षा और परंपरा का अंतःसंबंध. इंदौर: मध्यप्रदेश जनजातीय शिक्षा परिषद। पृ. 17-69।
4. तिवारी, विनय कुमार (2021). डूंगर जनजाति में आधुनिक शिक्षा की भूमिका. अहमदाबाद: गुजरात आदिवासी अनुसंधान संस्था। पृ. 19-55।
5. गोस्वामी, मनीष कुमार (2021). हल्बा समाज में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता. रायपुर: छत्तीसगढ़ अनुसूचित जनजाति अध्ययन संस्थान। पृ. 20-66।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

6. शुक्ल, राजेश कुमार (2020). झारखंड के मुंडा जनजाति में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता. रांची: जनजातीय शोध संस्थान।
7. पांडेय, नरेंद्र कुमार (2020). सौरिया जनजाति में शिक्षा और संस्कृति. भुवनेश्वर: उड़ीसा अनुसूचित जनजाति अकादमी। पृ. 25-78।
8. राठौर, दीपक कुमार (2019). लोधा समाज में सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा. कोलकाता: पश्चिम बंगाल जनजातीय अध्ययन केंद्र। पृ. 18-63।
9. पटेल, मीना देवी (2019). गरासिया समाज में सांस्कृतिक अस्मिता और शिक्षा. जयपुर: अध्ययन प्रकाशन। पृ. 88-110।
10. देशमुख, अरुण कुमार (2018). ठक्कर जनजाति में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समन्वय. मुंबई: महाराष्ट्र आदिवासी विकास बोर्ड। पृ. 22-74।
11. चौहान, सुरेश कुमार (2018). कोंध जनजाति में शिक्षा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. भुवनेश्वर: शोध निकेतन। पृ. 33-55।
12. तिवारी, अशोक कुमार (2017). कोरकू समाज में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. पुणे: जनजाति अध्ययन केन्द्र। पृ. 64-85।